Hindi
Explore– Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

पं0 चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानियों के कथ्य और शिल्प : एक समीक्षात्मक अध्ययन

• एकता प्रियदर्शिनी • अदिति शर्मा • कुमारी प्राची मिश्रा
• दीपा श्रीवास्तव

Received : November 2016
Accepted : March 2017
Corresponding Author : Deepa Srivastava

Abstract : पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी हिन्दी साहित्याकाश के देदीप्यमान नक्षत्र हैं, जो मात्र एक कहानी 'उसने कहा था' के बल पर हिन्दी साहित्य के संपर्क में आनेवाली अनेक पीढ़ियों के स्मृति पटल पर छाए रहे हैं। पूर्व दीप्ति शैली में लिखी इनकी यह कालजयी रचना निःस्वार्थ प्रेम, बलिदान और त्याग की अमर गाथा है। लेकिन गुलेरी जी ने अपने पूरे साहित्यिक जीवन में केवल एक कहानी नहीं लिखी थी। 1911 ई0 में उनकी दो अन्य कहानियाँ भी प्रकाशित हुई थीं - 'सुखमय जीवन' और 'बुद्धू का काँटा'। कथ्य और शिल्प की दृष्टि से ये दोनों कहानियाँ भी अपने समय की अद्‌भुत कहानियाँ थी।

इन तीनों कहानियों के पात्र साधारण हैं। इन साधारण पात्रों को लेकर गुलेरी जी ने असाधारण सौंदर्य की सृष्टि की। जीवन की जिन स्थितियों के चित्र उन्होंने अपनी कहानियों में चित्रित किए, वे आज भी नवीन है। साहित्य की विशिष्टता क्षण-क्षण नए सौंदर्य को प्रकट करने में हैं। मौलिकता ही वह तत्त्व हैं, जो किसी रचना को नित्य नया सौंदर्य प्रदान करती है। गुलेरी जी की तीनों कहानियाँ मौलिक होने के साथ-साथ परिस्थितियों पर इच्छाशक्ति की विजय की रचनाएँ हैं। इसलिए ये आज भी ताजगी और ऊर्जा से ओतप्रोत हैं। हिन्दी साहित्याकाश के जगमगाते नक्षत्रों के मध्य इन उत्कृष्ट कहानियों के रचनाकार के रूप में गुलेरी जी का यश ध्रुवतारे की तरह सदा अटल रहेगा

संकेत शब्द :- कालजयी, आदर्श, मौलिकता, शाश्वत लोकप्रियता।

एकता प्रियदर्शिनी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2014–2017), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

अदिति शर्मा
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2014–2017), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

कुमारी प्राची मिश्रा
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2014–2017), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

दीपा श्रीवास्तव
व्याख्याता, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : deepsri24@gmail.com

भूमिका :

हिन्दी के अनन्य आराधक और बहुआयामी प्रतिभा के धनी अमर कहानीकार पं० चंद्रधर शर्मा गुलेरी जी का साहित्यिक जीवन बीसवीं शताब्दी के उन्मेष से प्रारंभ होता है। यह समय पुरातत्त्व, इतिहास तथा भाषा विज्ञान संबंधी अनुसंधानों का था। डॉ० श्यामसुंदर दास, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और मैथिलीशरण गुप्त जैसे साहित्यसेवी इस समय अपनी एक विशिष्ट पहचान बना चुके थे। ऐसे साहित्यिक परिवेश में गुलेरी जी भी 'समालोचक', 'सरस्वती', 'अभ्युदय' एवं 'आनंद कादंबिनी' जैसी पत्रिकाओं से विशेष रूप से जुड़कर हिन्दी जगत के बौद्धिक जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग बन गए थे।

विजयेंद्र स्नातक के शब्दों में :-

''चन्द्रधर शर्मा गुलेरी संस्कृत, प्राकृत्त, अपभ्रंश और

हिन्दी के उद्‌भट्ट विद्वान थे। उन्होंने पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक संबंधों से परिपूर्ण विषयों पर सामान्य भाषा में निबंध लिखे, किंतु भाषा प्रौढ़, परिमार्जित एवं विषयानुकूल है। 'कछुआ धर्म' और 'मारेसि कुठाऊँ' इनके बहुचर्चित निबंध हैं।'' (स्नातक, 244)

उस युग के कई अन्य निबंधकारों की तरह गुलेरी जी के लेखन में भी मस्ती तथा विनोद भाव की एक अंतर्धारा लगातार प्रवाहित होती रहती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, **''ये जैसे धुरंधर पंडित थे, वैसे ही सरल और विनोदशील प्रकृत्ति के थे।''** (शुक्ल, 356)

हिन्दी कहानी का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। बीसवीं शताब्दी के पहले दशक में हिंदी की पहली कहानी लिखी गई। दूसरे दशक में कई प्रतिष्ठित कहानीकारों का उदय हुआ। इस दूसरे दशक में ही ऐसी कई कहानियाँ भी सामने आयीं जो हिन्दी की अमर कहानियाँ मानी जाती हैं। इसी दूसरे दशक की उपलब्धि चंद्रधर शर्मा गुलेरी और उनकी कहानियाँ हैं।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहानीकार गुलेरी जी के संदर्भ में जो कहा है, वह सर्वथा उपयुक्त है, **''चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानियों की संख्या तो बहुत थोड़ी है, पर इन स्वल्प रचनाओं के बल पर वे साहित्य में अपूर्व गौरव के अधिकारी हुए हैं।'' (द्विवेदी, 244)**

उद्‌देश्य :

1. **सामान्य :** यूँ तो पं० चंद्रधर शर्मा गुलेरी हिन्दी के प्रसिद्ध निबंधकार हैं, लेकिन निबंध विधा पर जबर्दस्त पकड़ रखनेवाले गुलेरी जी हिन्दी के श्रेष्ठ कहानीकार भी हैं। उनकी प्रसिद्धि, का आधार उनके द्वारा रचित हिन्दी की सार्वकालिक, श्रेष्ठतम कहानियों में से एक - **'उसने कहा था'** है। इसके अतिरिक्त उन्होंने दो अन्य कहानियाँ भी लिखी हैं - 'सुखमय जीवन' और 'बुद्धू का काँटा'। कथ्य और शिल्प की दृष्टि से ये कहानियाँ भी उल्लेखनीय हैं। इस परियोजना **'पं० चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानियों में कथ्य और शिल्प : एक समीक्षात्मक अध्ययन'** के अन्तर्गत उनके द्वारा रचित उपर्युक्त तीन कहानियों के आधार पर साहित्य की इस सर्वाधिक प्रभावशाली और लोकप्रिय विधा के प्रणेता के रूप में गुलेरी जी की विशिष्टताओं को रेखांकित करना इस शोध पत्र का प्रमुख उद्‌देश्य है।

2. **विशिष्ट :** गुलेरी जी की कहानियाँ शाश्वत् नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा की दृष्टि से अद्वितीय हैं। **'उसने कहा था'** का प्रकाशन आज से एक शताब्दी पूर्व हुआ था। अपने युग के प्रायः समस्त प्रतिष्ठित आदर्शों - प्रेम और प्रेमी का आदर्श, युद्ध और वीरता का आदर्श, देशभक्ति और राजभक्ति का आदर्श, सेवा-त्याग और आत्म बलिदान का आदर्श- को गुलेरी जी ने अत्यंत कुशलता के साथ इस कालजयी रचना में चित्रांकित किया है। आदर्शवाद की दृष्टि से, उनकी अन्य दोनों कहानियाँ भी उल्लेखनीय हैं। ये आदर्श आज के युवाओं का मार्गदर्शन करने में पूर्णरूपेण सक्षम हैं। इन रचनाओं के पुनरावलोकन द्वारा युवापीढ़ी की मानसिकता को सकारात्मक दिशा में विकसित करना इस शोध पत्र का विशिष्ट उद्‌देश्य है।

अध्ययन पद्धति :

परियोजना के लिए हमने शोध-प्रविधि की द्वितीयक पद्धति का प्रयोग किया है। तथ्यों के संग्रह के लिए अध्येय रचनाओं पर किए गए पूर्व शोध-ग्रंथों, संबंधित पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं एवं इंटरनेट की मदद ली है।

गुलेरी जी द्विवेदी युग के प्रतिनिधि लेखक तथा सशक्त कथाकार थे। यद्यपि उनकी प्रसिद्धि का आधार **'उसने कहा था'** है। लेकिन उन्होंने दो और कहानियाँ भी लिखी हैं - **'सुखमय जीवन'** और **'बुद्धू का काँटा'** ।

सुखमय जीवन-'सुखमय जीवन' शीर्षक कहानी 1911 ई० में भारतमित्र में प्रकाशित हुई थी। यह कहानी छद्‌मलेखन को आधार बनाकर लिखी गई एक रोचक कथा है। मात्र किताबी ज्ञान के बल पर जीवन के अनुभवों की आँच में तपे बिना, लेखक बनने और हर पुस्तक को बिना विवेचन ब्रह्म वाक्य की तरह लेनेवालों पर इस कहानी में सशक्त व्यंग्य किया गया है।

जयदेव शरण वर्मा ग्रेजुएट होने के बाद कुछ पुस्तकों से ज्ञान संग्रह करके सुखी वैवाहिक जीवन पर एक पुस्तक लिखते हैं। वे स्वयं अविवाहित हैं। वैवाहिक जीवन के बारे में उनका अनुभव नगण्य है। समालोचकों द्वारा कहानी की कटु आलोचना होती है और पुस्तक की मात्र 17 प्रतियाँ बिकती हैं। गुलाब राय वर्मा नाम के एक जागरूक ब्रह्मसमाजी तथा उनकी बेटी कमला को यह पुस्तक बहुत पसंद आती है। उन्हें लगता है कि इस पुस्तक का लेखक बहुत ही अनुभवी होगा जबकि गुलाब राय की पत्नी का विचार है कि पुस्तक

सुनी-सुनाई बातों के आधार पर लिखी गई है। संयोग से जयदेव शरण वर्मा और कमला की मुलाकात होती है। संक्षिप्त परिचय के बाद एक दिन जयदेव कमला के समक्ष प्रणय निवेदन करते हैं। कमला और उसके पिता उन्हें लफंगा कहकार उन्हें खूब फटकारते हैं। लेकिन जब जयदेव उन्हें बताता है कि वह अविवाहित है और पुस्तक उसने सिर्फ सुनी-सुनाई बातों के आधार पर लिखी है तो कमला और बाबू गुलाब राय पानी-पानी हो जाते हैं और जयदेव के साथ कमला का विवाह तय हो जाता है।

यह कहानी प्रारंभ से अंत तक छद्म लेखकों और छद्म पाठकों पर तीखा प्रहार करती है। नाटकीय स्थिति के द्वारा कहानी में व्यंग्य की अभिव्यंजना की गई है और संवाद काफी चुटीले हैं। कुछ समीक्षकों ने इस कहानी को अतिनाटकीयता और असंभाव्यता के कारण सामान्य कोटि का माना है। डॉ० नगेन्द्र के अनुसार - **'सुखमय जीवन'** में तो कहानी अच्छी तरह बन भी नहीं पायी ।

उसकी चरम घटना में विस्मय का अत्यंत अस्वाभाविक और अतिरंजित प्रयोग है किंतु यदि इस कहानी को व्यंग्य रचना के रूप में देखा जाए तो अस्वाभाविकता और अतिरंजन स्वाभाविक और अनिवार्य तत्त्व बन जाते हैं।

बुद्धू का काँटा :- 'बुद्धू का काँटा' का प्रकाशन भी 1911 ई० में हुआ था। इसमें भी लेखक की व्यंग्य दृष्टि स्पष्ट है। यह कहानी एक प्रेमकथा है। इस कहानी में लेखक ने अनेक आदर्शवादी चरित्रों की रचना की। कहानी का ढ़ाँचा उपन्यास का-सा है। इसलिए वे रघुनाथ प्रसाद त्रिवेदी के पिता बाबूजी और इलाही का विस्तृत शब्द-चित्र खींचते हैं। इस कहानी का एक अंश 'पनघट' शीर्षक से अलग छपा बताया जाता है। रघुनाथ प्रयाग से पढ़कर आया है, जो गाँव के तौर-तरीकों से बिल्कुल अनभिज्ञ है। भागवंती कुएँ में पानी भरनेवाली महिलाओं के दल में एक ही हँसोड़, चुलबुली और बड़बोली किशोरी है। वह रघुनाथ के बुद्धूपन पर फब्तियाँ कसती है क्योंकि वह कुएँ से पानी का लोटा भी नहीं खींच सकता और औरतों से बात करते-करते पसीना-पसीना होने लगता है। मजाक और फब्तियाँ सीमा से कुछ आगे बढ़ जाती है और रघुनाथ बुरी तरह परास्त होता है। फिर वही लड़की नदी किनारे उसे मिलती है और उसकी हर बात की नकल उतारती है। इस पर वह उसे पकड़ने के लिए उठता है और पैर रपट जाने से नदी में गिर पड़ता है। भागवंती उसे डूबने से बचाती है। इस भागदौड़ में भागवंती के पैर में काँटा चुभता है, जिसे रघुनाथ निकालता है और अपनी जेब में रख लेता है। संयोग से इसी लड़की के साथ माता-पिता द्वारा रघुनाथ का संबंध निश्चित किया गया होता है। विवाह के फेरों के बाद जब वे दुशाले की ओट में एक-दूसरे को देखते हैं तो दोनों हतप्रभ रह जाते हैं। बाद में मिलन के समय भागवंती अपनी उद्दंडता के लिए पति रघुनाथ से क्षमा मांगती है और रघुनाथ रखे हुए काँटे को दिखाकर अपनी मनोभावना को प्रकट करता है।

इस प्रकार कुल मिलाकर यह कहानी एक प्रेमकथा बन जाती है।

'उसने कहा था'- 1915 में प्रकाशित 'उसने कहा था' हिन्दी की सर्वाधिक सर्वश्रेष्ठ कहानी है। हिन्दी में कहानी विधा का स्वतंत्र विकास इस कहानी से माना जा सकता है। त्याग और बलिदान की भारतीय परंपरा इसके भी मूल में हैं। कहानी में प्रेम एक आध्यात्मिक अनुभूति के रूप में प्रकट हुआ है। गुलेरी जी ताँगेवाले के संवादों में अथवा सिपाहियों के वार्त्तालाप में हास्य, विनोद और जीवन की ताजगी पर उतना ही बल देते हैं, जितना प्रेम की आध्यात्मिक अनुभूति पर ।

अभी तक **'उसने कहा था'** को लहना सिंह के ही प्रेम और बलिदान-त्याग की कहानी के रूप में देखा जाता रहा है। एक पक्षीय प्रेम की दृष्टि से पाठ्यक्रमों में इसे पढ़ाया जा रहा है लेकिन इसे सूबेदारनी के उदात्त, गंभीर प्यार और अडिग विश्वास की कहानी के रूप में भी देखा गया है। इसी आधार पर इसका नामकरण भी हुआ है।

यह कहानी कालजयी रचना सिद्ध हो चुकी है क्योंकि इसी एक कहानी के बल पर गुलेरी जी एक शताब्दी से हिंदी जगत पर छाए रहे। विमल राय द्वारा इस कहानी पर फिल्म बनाए जाने के बाद इसकी लोकप्रियता में और भी विस्तार हुआ। यह कहानी प्रेम की आध्यात्मिक अनुभूति की है। आध्यात्मिक इस अर्थ में कि इसमें प्रेमी-प्रेमिका के बीच शारीरिक संबंध की ऊष्मा नहीं है बल्कि प्रेम एक ज्योति की तरह दोनों के हृदय में विद्यमान रहता है और वह अनुभूति इतनी सुखद, इतनी निर्मल है कि युद्ध की विभीषिका भी उसे भंग नहीं कर पाती ।

अपनी पहली दो कहानियों में गुलेरी जी ने नायक और नायिका के बीच प्रेम की उत्पत्ति की सूचना स्पष्ट शब्दों में दे दी है, किंतु तीसरी कहानी में केवल संकेत दिए हैं; बाकी पाठक के अनुमान के लिए छोड़ दिया गया है। श्रेष्ठ कला होती भी सांकेतिकता में ही है। पहली दो कहानियों में घटनाओं को सीधे-सादे कालानुक्रम से रखा गया है। इन कहानियों का अंत क्या होगा, इसका अनुमान लगा लेना

पाठकों की विदग्धता के साथ संयोजित किया गया है। **'उसने कहा था'** शीर्षक से ही पाठक के मन में जिज्ञासा क्रमशः तीव्रतर होती जाती है किंतु इसका समाधान कहानी के अंत में जाकर होता है। राजेंद्र यादव के शब्दों में :-

''लड़ाई के क्रूर और गतिमय पृष्ठभूमि में इस नाजुक-सी प्रेम कहानी की गंभीरता और भी निखर गई है। इस टेक्नीक का प्रयोग हेमिंग्वे ने अपनी कहानियों और विशेषकर 'फेयरवेल टु आर्म्स' उपन्यास में बड़े कलात्मक ढंग से किया है।'' (यादव, 23)

अपनी तीन कहानियों के आधार पर ही गुलेरी जी ने हिन्दी के विशिष्ट कहानीकार के रूप में ख्याति पाई। पुरानी पीढ़ी के आचार्य रामचंद्र शुक्ल, बाबू श्यामसुंदर दास, अमर नाथ झा, डॉ० बाबू राम सक्सेना, नंद दुलारे वाजपेयी, डॉ० नगेन्द्र आदि से लेकर नई पीढ़ी के समर्थ आलोचकों तक ने उन्हें श्रेष्ठ कहानीकार स्वीकार किया है। जिस प्रकार गुलेरी जी की कहानियों में उनके अनुभव और जीवन-दृष्टि में क्रमशः परिपक्वता आई है, उसी प्रकार उनकी कहानी कला में भी। उनकी कहानियों में संयोगों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

अपनी तीनों कहानियों में उन्होंने विकास के तीन सोपान पार किए हैं और हर सोपान पर इनकी कहानीकला परिपक्व होती गई। कथाकार गुलेरी जी की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे अपने युग से काफी आगे की कहानियाँ थी।

अतएव यह कहना प्रासंगिक है कि जब कहानी घुटनों के बल सरक रही थी तो गुलेरी जी की कहानियाँ पाँव के बल चलकर चौकड़ी भरने में समर्थ थीं। उन्होंने कलापूर्ण कहानी लिखकर युग को प्रेरित और गतिमान किया है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी और हिन्दी कथा साहित्य के मसीहा थे। एक यह कारण है कि उनकी कहानी **'उसने कहा था'** की लोकप्रियता का सिक्का आज भी जमा हुआ है। गुलेरी जी विद्वान थे। उनकी विद्वता की झलक उनकी कहानियों में साफ दिखाई देती है, लेकिन इस विद्वता को उन्होंने न तो अपने ऊपर हावी होने दिया, न अपनी कहानियों के ऊपर। इसका कारण यह था कि वह यथार्थ जीवन और उसके अनुभव से निर्मित हुई है। उनकी कहानियों में जीवन के विभिन्न पक्षों से संबंधित जो सकारात्मक कथन हमें मिलते हैं, वे उपदेश नहीं हैं, ये जीवन के अनुभव हैं।

निष्कर्ष :-

गुलेरी जी ने न केवल तीन कहानियाँ ही लिखी थीं बल्कि 1900-1922 तक प्रचुर साहित्य सृजन किया तथा अनेक हिन्दी लेखकों का मार्गदर्शन भी किया; लेकिन अपनी केवल एक कहानी **'उसने कहा था'** के बल पर हिन्दी साहित्याकाश के नक्षत्र बन गए।

बीबीसी के एक सर्वेक्षण के अनुसार **'उसने कहा था'** न सिर्फ प्रेम-कथाओं बल्कि हिन्दी की दस बेमिसाल कहानियों में भी शामिल है। हिन्दी साहित्य में **'उसने कहा था'** और गुलेरी जी को एक-दूसरे का पर्याय माना जाता है।

आखिर ऐसा क्या था इस कहानी में जिसने इसके साथ-साथ इसके लेखक को भी अमर कर दिया ?

यह कहानी आज के प्रेमी-प्रेमिकाओं की तरह न कोई प्रेम-सप्ताह मनाती है, न प्रेम दिवस । न गुलाबों के आदान-प्रदान का दिन और न ही वादे किए जाने का। लेकिन इसके लिखे जाने के 100 साल बाद भी आज जब हिन्दी की प्रेम कहानियों का जिक्र होता है तो अनेक लोगों की स्मृति में सबसे पहले इसी कहानी का नाम आता है।

आलोचक नामवर सिंह तो मानते हैं कि **'उसने कहा था'** का समुचित मूल्यांकन होना अभी बाकी है। उनके मुताबिक अभी उसे और समझने और पढ़े जाने की जरूरत है।

किसी कहानी को अमर बनानेवाला सबसे बड़ा गुण होता है कि वह आपको बार-बार पढ़ने के लिए उकसाए और बार-बार मन में अटकी सी रह जाए। हर बार के पाठ में उसके नए अर्थ और संदर्भ खुले। हर बार यह लगे कि कुछ और समझने को शेष रह गया है। **'उसने कहा था'** इस कसौटी पर शत्-प्रतिशत् खरी उतरती है।

सामान्य तौर पर देखा जाए तो तीन विशेषताएँ हैं- इसका शीर्षक, फलक और चरित्रों का गठन। जो 'उसने कहा था' को अमर और कालजयी बनाने में अपनी-अपनी तरह से योगदान देती हैं। इसके शीर्षक के साथ ही इसे जानने समझने का रोमांच भरनेवाला रहस्य जुड़ा हुआ था। शीर्षक सीधे-सीधे पाठकों को खींचता है और उनसे पुकारकर कहता है कि पढ़ो किसने कहा था ? किससे कहा था? कब कहा था? क्या कहा था? शीर्षक में वह नाटकीयता है जो पूरे संयोजन को मंच बना देती है।

युद्ध और प्रेम की इस कहानी के दो सिरे हैं। यह कहानी अमृतसर की गलियों की उस घटना के बाद सीधे प्रथम विश्वयुद्ध के मोर्चे पर पहुँचती है- वहाँ के भारतीय सैनिकों, उनकी चुहलबाजियों, अपने वतन की याद और स्मृतियों के बीच ।

पाँच खण्डों ओर 25 वर्षों के लंबे अंतराल के युद्ध में सिमटती यह कहानी विषय और अपने अद्भुत वर्णन में किसी उपन्यास सी है- प्रेम, कर्त्तव्य और देशप्रेम के तीन मूल उद्देश्य से जुड़ती, उसे अपने विषय बनाती हुई। शाब्दिक विवरणों से ज्यादा मनोविज्ञान को पढ़ते, पकड़ते और उसके चित्रण में रमती हुई यह कहानी कहीं भी अपने विषय से भटकती नहीं है। सोचकर देखें तो प्रेम, कर्त्तव्य और देशप्रेम एक ही सिक्के के अलग-अलग पहलू हैं और उसके मूल में प्रेम ही है। कर्त्तव्य तो प्रेम का ही एक रूप होता है और देशप्रेम भी तो बड़े और वृहद् अर्थों में प्रेम होता है। इसलिए यह कहानी हर अर्थ में प्रेम कहानी है।

अपने सामान्य जीवन में सामान्य व्यक्ति भी अपने भीतर प्रेम का अक्षयस्रोत किस प्रकार दबाए रहता है, एक मामूली-सी घटना व्यक्ति के अंतर्मन में फैलकर उसके जीवन को किस निर्णायक बिंदु पर ले जा सकती है, प्रेम की सात्विकता मनुष्य को कितनी उच्च भूमि पर पहुँचा सकती है- यह इस कहानी में व्यक्त है। इसमें घटना ऋजु मार्ग पर नहीं चलती, वह वक्र मार्ग पर चलती है यानि घटनाक्रम, कालक्रम पर नहीं मनोभूमि के अनुसार व्यवस्थित हैं।

यही इस कहानी की अनन्य विशेषता और इसकी शाश्वत् लोकप्रियता का कारण है।

इसी संदर्भ में विजयेंद्र स्नातक ने लिखा है- ''रचना शिल्प की दृष्टि से यह कहानी प्रथम विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखी गई थी किंतु यह रोमांटिक शैली और उत्सर्ग भावना के सामंजस्य की प्रसिद्ध कहानी है।'' (स्नातक, 243)

जैनेन्द्र ने एक बार गुलेरी के विषय में कहा था - ''पं० चंद्रधर शर्मा गुलेरी विलक्षण विद्वान थे। उनकी प्रतिभा बहिर्मुखी थी। उनमें गजब की जिंदादिली थी और उनकी बोली भी अनोखी थी। गुलेरी जी ने केवल विद्वता में अपने समकालीन साहित्यकारों से ऊँचे ठहरते थे अपितु, एक दृष्टि से वह प्रेमचंद से भी ऊँचे साहित्यकार हैं। प्रेमचंद ने समसायिक स्थितियों का चित्रण तो बहुत बढ़िया किया है, पर व्यक्ति-मानस के चितेरे के रूप में 'गुलेरी का जोड़ नहीं है।''

गुलेरी जी की तीनों कहानियों के पात्र साधारण हैं, लेकिन इन साधारण पात्रों को लेकर उन्होंने असाधारण सौंदर्य की सृष्टि की। जीवन की जिन स्थितियों के चित्र उन्होंने अपनी कहानियों में चित्रित किए, वे आज भी नवीन हैं। साहित्य की विशिष्टता है क्षण-क्षण नए सौंदर्य को प्रकट करने में ही साहित्य की विशिष्टता है और जो तत्त्व किसी रचना को नित्य नया सौंदर्य प्रदान करती है, वह है - मौलिकता ।

गुलेरी जी की तीनों कहानियाँ मौलिक होने के साथ-साथ परिस्थितियों पर इच्छाशक्ति की विजय की रचनाएँ हैं।

इसलिए ये आज भी ताजगी और ऊर्जा से ओतप्रोत हैं। ये कहानियाँ हिन्दी कथा साहित्य की अनमोल विरासत हैं। हिन्दी साहित्यकाश के जगमगाते नक्षत्रों के मध्य इन कालजयी कहानियों के रचनाकार के रूप में गुलेरी जी का यश ध्रुवतारे की तरह अटल रहेगा ।

संदर्भ-स्रोत :

आधार ग्रंथ :

कपूर, मस्तराम. (1985). भारतीय साहित्य के निर्माता : चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, नई दिल्ली : साहित्य अकादमी.

संदर्भ ग्रंथः

द्विवेदी, हजारी प्रसाद. (1982). हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन.

यादव, राजेन्द्र. (1997). कहानी स्वरूप और संवेदना, नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस.

शुक्ल, आचार्य रामचंद्र. (2015). हिन्दी साहित्य का इतिहास, पटना : अनुपम प्रकाशन.

स्नातक, विजयेन्द्र. (1996). हिन्दी साहित्य का इतिहास, नई दिल्ली : साहित्य अकादमी.